(सेवा, अहमदाबाद की संस्थापिका इला भट्ट ने 2 नवम्बर 2022 में हम सबसे विदा ले ली। उनके जीवन व अनूठे अनुभवों पर अरुणा रघुराम के साथ एक रोचक साक्षात्कार 'डिग्निटी डायलॉग' के अप्रेल 2020 में छपा था, जो उनका अंतरंग परिचय देता है।)

इला भट्ट

सौम्य योद्धा

सेवा (सैल्फ एम्प्लॉयड विमेन्स एसोसिएशन) की संस्थापिका इला भट्ट ने आजीवन महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया है - खास तौर से असंगठित क्षेत्र में काम कर रही महिलाओं के लिए। इस दौरान उन्होंने अनेक स्त्रियों को न केवल इस आन्दोलन से जुड़ने को प्रेरित किया बल्की लगातार नवाचार भी करती रहीं। अप्रेल 2020 के 'डिग्निटी डायलॉग' में अरुणा रघुराम के साथ इस विस्तृत वार्तालाप में उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को साझा किया।

हिंदी अनुवाद: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

इला भट्ट का पंचशील सोसायटी, अहमदाबाद में जो घर है उसका नाम है टॉय हाउस (खिलौना घर)। यह सुन आपके मन में सुगबुगाहट तो जगी होगी कि यह नाम आखिर क्यों और कैसे पड़ा। उनसे पूछने पर वे मुस्कुरा कर कहती हैं, ''जब नगरपालिका में घर का पंजीकरण करवाने जाना था, मेरे दोनों बच्चे छोटे थे। घर में हमेशा चारों ओर खिलौने बिखरे-पसरे रहते थे। सो हमने घर का नाम 'खिलौना घर' रख दिया। घर की साफ़-सुथरी सादगी इला जी के बारे में बहुत कुछ कहती है। सच तो यह है कि इला भट्ट स्वयं सादगी का प्रतीक हैं - उनकी प्रेरणा के सबसे बड़े स्त्रोत महात्मा गांधी रहे हैं। पर साथ ही यह सादगी उनके अनुशासन का भी प्रतीक है। सफ़ेद साड़ी में लिपटी यह सौम्य योद्धा साक्षात्कार के लिए बैठने पर मुझे देख मुस्कुराती हैं।

इला भट्ट को, जिनकी गिनती 25 महान भारतीयों में की जाती है, 'सौम्य क्रांतिकारी' भी कहा गया है, क्योंकि उन्होंने बिना आक्रामक हुए स्त्रियों के मुद्दे उठाए।



जून 2012 में संयुक्त राज्य अमरीका कि सैक्रेटरी ऑफ स्टेट हिलरी क्लिंटन ने इला भट्ट को अपनी 'नायिकाओं' (हिरोइन) में एक कहा था। पर उनकी इस दृश्य सौम्यता से आप उस आंतरिक फ़ौलादी दृढ़ता का अंदाज़ नहीं लगा सकते जिसकी ज़रूरत उन्हें वह सब हासिल करने में पड़ी होगी, जो वे हासिल कर सकीं। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी 1972 में सैल्फ एम्प्लॉयड विमेन्स् एसोसिएशन (सेवा) की स्थापना। यह एक ट्रेड यूनियन है जिसकी स्थापना कपड़ा उद्योग में स्वरोज़गारी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए की गई थी। सेवा का वेबसाइट आज बताता है कि यह ग़रीब स्वरोज़गारी महिला कामगारों का संगठन है।

ये महिलाएं मज़दूरी कर या छोटे-मोटे कारोबारों से अपनी आजीविका कमाती हैं। न तो उनके पास नियमित वेतन वाली नौकरियाँ हैं, ना ही उन्हें संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को मिलने वाले कल्याण भत्ते मिलते हैं। वे हमारे देश के असुरक्षित श्रम बल का हिस्सा हैं। हमारे देश के श्रम बल का 93 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। इधर महिला श्रमिकों का 94 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में लगा हुआ है। और तो और उनके काम की कहीं गिनती ही नहीं होती, सो वे अदृश्य रह जाती हैं।

विगत दशकों में इला जी के नेतृत्व में सेवा ने अनौपचारिक क्षेत्र में एक प्रकार की क्रांति ला दी है। समय ने इला भट्ट से नरमी बरती है। वे 87 की उम्र में सीधे पीठ बैठ किस्से सुनाती हैं, जिनमें मृदु हास्य का पुट है।

आरंभिक वर्ष

इला भट्ट का जन्म 1933 में खाड़िया, अहमदाबाद के देसाई पोल में हुआ था। उनके पिता सुमन्तराय भट्ट वकील थे। उनकी माँ वनलीला व्यास महिला आन्दोलन में सक्रिय थीं। वे अपने माता-पिता की तीन बेटियों में

अनेकानेक सम्मान

इला भट्ट के सफल नेतृत्व ने उन्हें राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी। उन्हें अनेक भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, सम्मान व मानद डिग्रियों से नवाज़ा गया, जिनमें निम्नोक्त शामिल हैं:

* समुदायिक नेतृत्व के लिए रेमोन मैगसैसे पुरस्कार (1977)

* मानवीय वातावरण को बदलने के लिए राइट लाइवलीहुड पुरस्कार (1984) जो उन्हें गृह आधारित उत्पादकों को खुदके कल्याण तथा आत्म-सम्मान के लिए संगठित करने के लिए दिया गया।

* पद्मश्री (1985) व पद्म भूषण (1986)।

* भारत में ग़रीब महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निवानो शांति पुरस्कार (2010)।

* नवम्बर 2010 मे संयुक्त राज्य अमरीका की सैक्रेट्री ऑफ स्टेट हिलरी क्लिंटन ने इला भट्ट को भारत में दस लाख से भी अधिक विपन्न स्त्रियों को गरिमा प्रदान करने व आत्म-निर्भर बनने में मदद करने के लिए ग्लोबल फेयरनैस इनिशिएटिव पुरस्कार से सम्मानित किया।

* 27 मई 2011 में समाज में महिलाओं को बेहतर दर्जा पाने में मदद करने के लिए रैडक्लिफ पदक दिया गया।



* 2011 में ज़मीनी स्तर की स्त्रियों को उद्यमशील व सशक्त बनाने के प्रयासों के चलते इन्दिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण व विकास का आजीवन उपलब्धि पुरस्कार प्रदान किया गया।

* जून 2001 में हारवर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें ह्यूमेन लैटर्स की मानद् डॉक्टरेट से सम्मानित किया। 2012 में जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय ने उन्हें ह्यूमेन लैटर्स में मानद् डॉक्टरेट से नवाज़ा, और बैल्जियम की युनिवर्सिटे लिब्रे द ब्रसल्स ने मानद् डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। येल तथा नटाल विश्वविद्यालयों ने भी उन्हें मानद् डॉक्टरेट दे सम्मानित किया।

दूसरी सन्तान थीं। उनका बचपन और कॉलेज के आरंभिक वर्ष सूरत में बीते। वे 1940 से 48 तक सार्वजनिक कन्या उच्च विद्यालय, सूरत में पढ़ीं। अपने स्कूली दिनों की झलकी उन्होंने यह कह कर दी, "मैं स्कूल और दोस्तों के बीच खुद को हमेशा अलग-थलग महसूस करती थी। इसलिए क्योंकि मैं अपनी कक्षा की दूसरी लड़कियों से छोटी थी। मेरे माता-पिता ने घर में बहुत जल्दी ही मेरी बुनियादी शिक्षा आरंभ कर दी थी। सच तो यह है कि छह साल की उम्र में मुझे तीसरी जमात में दाखिल करवा दिया गया था।"

एक मज़ेदार घटना को याद करते हुए उन्होंने बताया, "मैं दूसरी लड़कियों के साथ गोल घेरे में गरबा नाचना चाहती थी। पर जब भी मंच पर स्कूल का प्रदर्शन होता, कद में छोटी होने के कारण मुझे घेरे के बीच बाल कृष्ण बना, त्रिभंग में, बाँसुरी पकड़ा कर खड़ा कर दिया जाता। यह भूमिका थी तो विशेष, पर इससे मुझे नाचने का मौका ही नहीं मिलता था। इन स्पर्धाओं में मुझे अमूमन एक इनाम मिलता था - पर यह सान्त्वना पुरस्कार होता था, क्योंकि मैं दूसरों से उम्र और कद में छोटी होती थी। मुझे यह विशेष बरताव कभी पसन्द नहीं आता था।" स्वतंत्रता संग्राम उन दिनों अपने चरम पर था। उनके स्कूल के पास से अक्सर जुलूस निकला करते थे। एक बार कक्षा की खिड़की के बाहर छात्राओं ने बन्दूक की आवाज़ सुनी। कुछ ही मिनटों में एक सत्याग्रही उनकी कक्षा में पनाह लेने आ घुसा। छात्राओं ने छिपने में उसकी मदद की। बाद में उनके भूगोल के शिक्षक ने उन्हें "विरोध का अर्थ और उसे क्यों निर्भीक व विद्वेषहीन होना चाहिए" का पाठ सिखाया।

इला जी ने एक अन्य घटना का भी वर्णन किया। अहमदाबाद के पोल इलाके में उनके घर के पास से एक बार एक जुलूस निकला। कुछ सत्याग्रही घर के अन्दर आ छिपे, और जल्द ही उनके पीछे बन्दूकों से लैस पुलिस भी। पुलिस घर में घुस कुछ तलाश रही थी। इला ने हिम्मत जुटा पूछ ही लिया, "आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?" जवाब मिला कि वे 'भारत मा अंग्रेजी राज' (भारत में अंग्रेज़ों का राज) शीर्षक से छपी किताब की प्रति तलाश रहे थे, जो घर में छिपी थी। इलाजी ने याद कर बताया, "उन्होंने पूजा घर को हाथ नहीं लगाया सो पस्तक उन्हें नहीं मिली। वह भगवान कृष्ण की प्रतिमा के नीचे छिपाई हुई थी।" उन्होंने यह भी बताया कि उनके नाना मणिधर प्रसाद व्यास नमक सत्याग्रह के समय दाण्डी के पास घरसाणा गए थे। "घरसाणा में पुलिस ने सत्याग्रहियों को मारा-पीटा और मेरे नाना गिरफ्तार कर लिए गए। वे सरकारी अस्पताल में डॉक्टर थे। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और स्वतंत्रता संग्राम में जुट गए।"

कॉलेज का मंत्र

इला भट्ट ने मगनलाल ठाकोरदास बलमुकुन्ददास कला कॉलेज से 1952 में अंग्रज़ी में स्नातक किया। हालांकि वे अहमदाबाद से थीं, उनकी आरंभिक स्कूली और कॉलेज शिक्षा सूरत में हुई थी। यह पूछने पर उन्हें किस शहर से अधिक लगाव है, उनका जवाब था, "जहाँ तक संस्कृति, खान-पान और जीवनशैली की बात है मैं सूरत की हूँ। पर हमारे परिवार में भाषा की शुद्धता पर बल दिया जाता था, जो सूरती गुण नहीं है।" 1954 में उन्होंने अहमदाबाद के सर एल.ए. शाह लॉ कॉलेज से विधि की शिक्षा पूरी की। हिन्दू कानून पर उनके काम के लिए उन्हें स्वर्ण पदक दिया गया। कॉलेज के दिनों में वे राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में गहरी रुचि लेने लगी थीं।

वे बताती हैं कि कॉलेज में उनकी मित्र मण्डली का मूल मंत्र था सादगी। "हम कॉलेज में मुसड़े कपड़े पहन कर आते थे। अगर किसीके कपड़ों पर इस्त्री फिरी होती थी तो मानो हमारी नाक ही कट जाती थी। दूसरे दर्जे में सफ़र करने की भी सख्त मनाही थी," वे याद करती हैं। सक्रिय छात्र नेता होने के कारण वे आज़ाद भारत की पहली जन गणना से जुड़ीं। इस कारण वे सामान्य जन की कठिनाइयों से परिचित हुईं। "मैं राष्ट्रीय आन्दोलन में रुचि लेने लगी। मेरे अंतस में अन्याय झेल रहे लोगों की मदद करने की इच्छा जगी। एक पर्यवेक्षक भर बने रहना मुझे नाकाफ़ी लगा। मुझे इस मुहिम से जुड़ने की ज़रूरत महसूस हुई।"

कानूनी पेशा

इला भट्ट कानून के प्रति क्यों आकर्षित हुईं - क्या यह न्याय के प्रति उनका जज़्बा था? उन्होंने बताया कि दरअसल उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ने उन्हें इस पेशे को चुनने की दिशा में धकेला। उनके पिता के पक्ष के अधिकांश सदस्य या तो वकील या न्यायाधीश थे। "क्योंकि मेरा कोई भाई नहीं था मेरे माता-पिता चाहते थे कि मैं वकील बनूँ। सो मैंने उनके दिशादर्शन में – जैसा उन दिनों का आम चलन था - वकालत का अध्ययन करना चुना और वकील बनीं। साथ ही आज़ादी के संघर्ष के मेरे अनुभवों ने मुझमें न्याय और ग्राम उत्थान के लिए कुछ कर पाने की इच्छा भी जगाई।" हालांकि उन्होंने अपने कामकाजी जीवन की शुरुआत एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई में अंग्रज़ी पढ़ाने से की, वे जल्द ही वकालत की ओर मुड़ गईं। उन दिनों युवा वर्ग के प्रेरणा स्त्रोत महात्मा गांधी थे और सभी उनके द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलना चाहते थे। सो 1955 में इला भट्ट टैक्सटाइल लेबर एसोसिएशन



(कपड़ा उद्योग श्रमिक संगठन) या टी.एल.सी. नामक ट्रेड यूनियन की श्रमिक शाखा में कनिष्ठ वकील के रूप में जुड़ीं। गांधी के नेतृत्व में कपड़ा श्रमिकों के आंदोलन के बाद, 1917 में अनुसूया साराभाई व महात्मा गांधी ने टी.एल.सी की स्थापना की थी। उस वक्त अहमदाबाद में कपड़ा मिलों की भरमार थी और टी.एल.सी. के पास बहुतेरा काम था। "इस दौरान मेरी रुचि समाज के अहम् भाग के रूप में 'काम' और 'कामगारों ' की अवधारणा में जगी। महिलाएं इसमें बाद में जुड़ीं, तब जब मुझे हड़ताल कर रहे मज़दूरों के घर भेजा गया। तब मैंने उन तमाम कामों को जाना जो घर का चूल्हा जलाए रखने के लिए स्त्रियाँ करती थीं।"

इला जी के अनुसार सूरत, अहमदाबाद से कहीं अधिक उदारवादी शहर था। जब उन्होंने अहमदाबाद में काम करना शुरु किया उनसे कहा गया कि वे सिर ढका करें। इला ने इन्कार कर दिया, क्योंकि यह उनकी आदत में शुमार न था। वे अपने बालों में वेणी भी लगाती थीं, जो सूरत पर महाराष्ट्र का प्रभाव था। "ऐसा करने पर अहमदाबाद में मेरी खूब बुराई और आलोचना हुई," उन्होंने हंसते हुए बताया। इसके अलावा वे मिलों में जाते वक्त अपने वैस्पा स्कूटर से जाती थीं, जो लोगों को चौंकाता था। "मुझे लगता था कि मैं 'रोमन हॉलीडे' की, जो विलियम वायलर द्वारा निर्देशित विख्यात फिल्म है, नायिका ऑड्री हैप्बर्न हूँ।"

व्यक्तिगत जीवन

1956 में इला ने रमेश भट्ट से विवाह किया। रमेश उस वक्त गुजरात विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। बाद में वे गुजरात विश्वविद्यालय क्षेत्रीय शिक्षक संघ के अध्यक्ष बने और उन्होंने गुजरात इकोनॉमिक एसोसिएशन नामक एक शोध संस्था की स्थापना की। इला व रमेश कॉलेज के दिनों से एक-दूसरे को पसन्द करते थे। अपने माता-पिता को इसके लिए राज़ी करना इला के लिए आसान न था, क्योंकि दोनों में 'वर्ग' का अन्तर था। छात्र नेता, चिंतक, विद्वान, सक्रियकर्मी व क्रांतिकारी रमेश भट्ट ने अपनी पत्नी के वंचित ग़रीबों के लिए किए गए काम में हमेशा सहयोग दिया। अपनी पुस्तक *वी आर पुअर बट सो मैनी: द स्टोरी ऑफ सैल्फ एम्प्लायड विमेन* इन इण्डिया को इला जी ने अपने पति को समर्पित किया है। दम्पति के दो बच्चे हैं, अमीमयी (1958) और मिहिर (1959)।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन

इला ट्रेड यूनियन आन्दोलन से कैसे जुड़ीं इसकी कहानी भी रोचक है। इला भट्ट को नैशनल ट्रेड भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ट्रेड यूनियन शाखा, नैशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इन्टक) ने इज़रायली श्रम संगठन 'हिस्ताद्रूत' द्वारा तेल अविव में आयोजित एक कोर्स में भागीदारी करने के लिए चुना।

वरिष्ठ नागरिकों और महिलाओं के लिए संदेश

क्या वरिष्ठ नागरिकों के लिए उनका कोई संदेश है? "हमें अपने दिल की सुननी चाहिए और अपनी आवाज़ तलाशनी चाहिए। मेरा मानना है कि व्यस्त और सक्रिय रहना बेहद ज़रूरी है। उम्र के बढ़ने के साथ हमें अपनी आगामी योजना बना लेनी चाहिए। आजकल कुछ नया सीखते जाने और सक्रिय बने रहने के रास्ते तलाशना बड़ा आसान है," वे कहती हैं। सेवा से 1996 में सेवानिवृत्त होने के बाद वे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखने लगीं। "मुझे संगीत सुनने से भी अधिक गाना और नाचना पसन्द है। मेरी माँ भी गाती थीं। बचपन में हमें गाना और नाचना बेहद अच्छा लगता था - खास तौर से गरबा नाचना - और नाटक खेलना भी। आजकल मैं रात के खाने के बाद अपना रियाज़ करती हूँ - रियाज़ करना बेहद ज़रूरी है।" उनके पसन्दीदा गायक पण्डित जसराज हैं। वे भी पण्डित जी के मेवाती घराने की शैली में गाती हैं।

"मेरा मानना है कि सम्मान और आनन्द के साथ अपना वरिष्ठ जीवन बिता पाने की कुंजी है छोटों से सीखना, अपने कौशलों को मांजना और दूसरों को सुनना।" वे सुझाती हैं, "छोटों को निर्देश और नसीहतें देना बन्द करें। हमारे अवलोकन, कार्य और जीवन के अनुभव उनसे बिलकुल ही अलग हैं। दुनिया तेज़ी से बदल रही है। छोटों को अपना भविष्य खुद तलाशने दें। आज का युवा वर्ग रचनात्मक है, अनेकानेक नवाचार करता है, कहीं अधिक जानकार और खुले दिमाग़ वाला है। उन पर भरोसा रखें।" महिलाओं के लिए उनका एक ख़ास संदेश है, "मैं स्त्रियों से कहूँगी कि वे खुद को अधिक गंभीरता से लें। आपके पास पुरुषों से अधिक विशेषाधिकार हैं। आपको दुनिया को एक ऐसे समाज की दिशा में बढ़ा ले जाना है जो सबको 'पोषण' देता हो। घरेलू काम-काज और बच्चों के लालन-पालन को ईश्वर कर दिया विशेषाधिकार मानें, न कि एक अन्यायपूर्ण बोझ। पुरुष से डरें नहीं। वह आपका मित्र है, शांतिपूर्ण और आनन्ददायी दुनिया के निर्माण में आपका साझेदार है।"





यह कोर्स ट्रेड यूनियन नेताओं के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कोर्स था। इला जी ने बताया, ''यह एक बेहद उम्दा दस माह की अवधि को कोर्स था जिसके वैचारिक व व्यावहारिक, दोनों ही पक्ष थे। मुझे जिस बात ने सबसे अधिक प्रभावित किया वह थी ट्रेड यूनियन आन्दोलन में सहकारी समितियों की भूमिका। यह अनूठा था कि इज़रायल का राष्ट्र निर्माण यूनियनों और सहकारी समितियों के स्तंभों पर गढ़ा गया था। इस अभिगम ने सेवा पर स्थाई प्रभाव डाला। सेवा में ज़मीनी स्तर पर यूनियन और सहकारी समितियों की साझेदारी सफल रही।'' आज वे ट्रेड यूनियन आन्दोलन को सहकारी समितियों के बिना अधूरा पाती हैं। उनकी दृष्टि में आज की समस्याओं का समाधान बुनियादी मूल्यों पर आधारित 'लोक सामूहिक संस्थाओं' (पीपल्स् कलैक्टिव्स्) में ही मिल सकता है।

सेवा की उत्पत्ति

महात्मा गांधी से प्रेरणा ले इला भट्ट ने 1972 में सेवा की स्थापना की और 1996 में उससे निवृत्त होने तक संस्था की महासचिव के रूप में काम करती रहीं। उनके नेतृत्व में सेवा ने सूक्ष्म वित्त (माइक्रो फाइनैन्स) के क्षेत्र में प्रवेश किया। 1974 में एक सहकारी बैंक गठित किया गया ताकि ग़रीब महिलाओं को अपने उद्यम शुरू करने के लिए छोटे ऋण दिए जा सकें। इधर यूनियन ने स्त्रियों को वित्तीय और व्यावसायिक परामर्श उपलब्ध करवाई। इला जी के अनुसार सेवा की तीन सबसे बड़ी उपलब्धियाँ क्या हैं? ''मुझे उपलब्धियों और असफलताओं के संदर्भ में सोचना सही नहीं लगता। मेरा अनुभव तो यह रहा है कि हरेक असफलता में भावी उपलब्धि की एक-दो नई कोंपलें होती हैं। इसी तरह हरेक सफलता एक-दो आपदाओं को जन्म देती है। महत्वपूर्ण तो दरअसल वह प्रक्रिया है - इस प्रक्रिया को ईमानदार और शांतिपूर्ण होना चाहिए। अपनी स्वाभाविक गति से बढ़ना-पनपना, खुद को और अपने समूह को सशक्त करते चलना ज़रूरी है,'' वे जवाब देती हैं।

पर साथ ही वे सेवा की विशेषताओं का भी उल्लेख करती हैं। उनका कहना है कि सबसे पहली और खास बात यह है कि सेवा में स्त्रियाँ नेतृत्व करती रही हैं। "मैं इस बात को बलपूर्वक कहना चाहूँगी कि महिलाएं ऐसी अर्थव्यवस्था को गढ़ने में नेतृत्व कर रही हैं जो 'लालन-पालन' करती हो (इकॉनमी ऑफ नर्चरेंस)।" दूसरे, एक समय भारतीय श्रम बल के 90 प्रतिशत को सरकारी आँकड़ों में 'गैर-श्रमिक' की तरह दर्ज किया गया था, जो सरासर अन्यायपूर्ण था। स्त्रियाँ अनौपचारिक क्षेत्र में आर्थिक रूप से सक्रिय हैं। पर उन्हें न तो न्यूनतम मज़दूरी मिलती है, न बीमा, न पेंशन। वे किसी भी श्रमिक कल्याण योजना का लाभ नहीं पातीं। सेवा के दशकों के काम ने अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र को मान्यता दिलवाई है।

"यूनियन से जुड़ कर, स्वयं को संगठित कर सेवा की महिला श्रमिक दृश्य बन सकीं। उन्हें अब सरकारी दस्तावेज़ों में श्रमिकों के रूप में दर्ज किया गया। सेवा ने उनकी संगठित आवाज़ को विकसित किया," इला भट्ट बताती हैं। सेवा का कार्य श्रमिक आन्दोलन, सहकारी आन्दोलन और महिला आन्दोलन को समेटता है। इसके बीस लाख से अधिक सदस्य भारत के विविध पेशों, जातियों व जातीय समूहों से हैं। संगठन अपने सदस्यों के रोज़गार और उनकी आत्मनिर्भरता पर ध्यान केन्द्रित करता है। पर साथ ही शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य सुरक्षा, बाल सुरक्षा और महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा के मुद्दों को भी संबोधित करता है। सेवा सहकारी बैंक ने, जिसकी इला भट्ट कई वर्षों तक अध्यक्ष रहीं, महिलाओं द्वारा अपनी संपत्ति बनाने (एसैट जनरेशन) में और उस पर मालिकाना हक स्थापित करने (एसैट ओनरशिप) में मदद की है। और ऐसा कर इन स्त्रियों के जीवन और उनके मस्तिष्क से ग़रीबी का उन्मूलन किया है। "ग़रीबी से निकलने का पहला कदम है संपत्ति पर मालिकाना हक। इसके पहले वे अनुदान (सब्सिडी) या राहत कार्यक्रमों पर निर्भर थीं," इला स्पष्ट करती हैं। तीसरे, श्रमिकों के अधिकार पाने के संघर्ष में सेवा की यूनियन और सहकारी समितियों के साझे कदम उठाने की रणनीति ने न केवल श्रमिकों को माल-तोल कर पाने की ताकत दी बल्की उन्हें राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में प्रवेश भी दिलवाया। इस संघर्ष में जो साझे कदम उठाए गए उसमें विरोध, मौजूदा व्यवस्था की ख़िलाफ़त के साथ रचनात्मक व शांतिपूर्ण विकल्प भी शामिल थे। सेवा के निजी अनुभवों के आधार पर इला जी का मानना है इस तरह की रणनीति हमेशा रचनात्मक व सफल होती है।

दिशादर्शक

सेवा की स्थापना और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष में इला भट्ट ने उन दिनों के प्रमुख क्रांतिकारियों में से किसीसे तो प्रेरणा ली होगी। ये राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व कौन थे जिन्हें इला अपना आदर्श मानती थीं? "मैं छोटी उम्र से ही स्वतंत्रता संग्राम की गवाह रही। स्कूल में हमारे शिक्षक भी राष्ट्रीय भावना, उपवास और सत्याग्रह का महत्व बताया करते थे। हमारे घर और मुहल्ले का वातावरण भी ऐसा ही था। मैंने महात्मा गांधी और भगवद् गीता में अपने जीवन को जीने का पथ पाया। गांधी के सादगी, अहिंसा, श्रम की गरिमा व मानवता के विचारों ने मुझे प्रभावित किया। मैंने इन मूल्यों को सेवा के दर्शन में शामिल करने की चेष्टा की।"

गांधी ने उनके पथ को आलोकित किया - गांधी के आदर्शों ने उन्हें भविष्य की दृष्टि स्पष्ट

करने में सहायता की। पर साथ ही वे यह भी कहती हैं कि सेवा की उनकी बहनें भी उनकी गुरु हैं। "मैं 'सही' और 'गलत' के उनके सहज भाव, उनकी पोषक प्रवृत्ति, उनके प्रकृति प्रेम, उनके गांभीर्य, संयम, औचित्य के भाव, अपने बच्चों की खातिर जड़ों से जुड़े रहने से बेहद प्रभावित रही। इन और तमाम अन्य कारणों से वे मेरे लिए सतत् प्रेरणा का स्त्रोत रही हैं, मैं उनका बेहद सम्मान करती हूँ। उन्होंने मुझे समाज और इन्सान के दिमाग से ग़रीबी हटाने की राह दिखाई।" 2002 में हुए गुजरात दंगों की एक घटना का वे बयान करते हुए बताती हैं कि सेवा की बहनों ने इस कठिन दौर में एक-दूसरे की रक्षा करने के प्रतीक के रूप में राखी बांधी थी।

विविध प्रभाव

इला भट्ट 1979 में विमेन्स् वर्ल्ड बैंकिंग के संस्थापक सदस्यों में एक बनीं तथा 1980 से 1998 तक उसकी अध्यक्ष भी रहीं। विमेन्स् वर्ल्ड बैंकिंग, दुनिया भर के सूक्ष्म वित्त संगठनों का वैश्विक नैटवर्क है, जो ग़रीब और ज़रूरतमन्द स्त्रियों की सहायता करता है। 1886 में भारत के राष्ट्रपति ने इला जी को राज्य सभा का सदस्य नियुक्त किया जहाँ उन्होंने 1989 तक अपनी सेवाएं दीं। संसद में वे स्वरोज़गारी महिलाओं के राष्ट्रीय आयोग की अध्यक्ष रहीं। आयोग का गठन निर्धन महिला श्रमिकों की वास्तविक स्थिति की छानबीन करने के लिए किया गया था। इला विश्व बैंक में सूक्ष्म वित्त, बैंकिंग तथा ग़रीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में परामर्शदात्री भी रहीं। वे 'होम नेट' जो घर से काम करने वाली श्रमिकों की संस्था है, तथा इन्टरनैशनल अलायन्स ऑफ स्ट्रीट वैण्डरस् जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भी अध्यक्ष रहीं। इला भट्ट 'विमेन इन इनफॉर्मल एम्प्लॉयमेंटः ग्लोबलाइज़िंग एण्ड आर्गेनाइज़िंग' के निदेशक मण्डल की सदस्य रहीं। साथ ही रॉकफैलर फाउन्डेशन की न्यासी भी।

द एल्डर्स

2007 में इला भट्ट 'द एल्डर्स' से जुड़ीं। मानव अधिकारों व शांति को प्रोत्साहित करने के लिए वैश्विक नेताओं के इस समूह की स्थापना नैल्सन मण्डेला ने की थी। 2016 में वे इसकी 'एमेरिटस' सदस्य बनाई गईं। महिलाओं और बालिकाओं को बराबरी का दर्जा दिलाने की द एल्डर्स की पहल से वे करीब से जुड़ीं, खास तौर से बाल-विवाह के मसले पर। 2012 में इला जी द एल्डर्स के कुछ सदस्यों के साथ बिहार गईं। इस समूह में आर्चबिशप डैसमण्ड टूटू भी शामिल थे। इस समूह ने बाल

"आत्म-निर्भरता के बिना विकास नहीं हो सकता। और आत्म-निर्भरता हासिल कर पाने की एकमात्र राह है संगठित होना। सेवा की अपनी बहनों की ओर से आज मैं स्वीडन के विशिष्ट अतिथियों के समक्ष राइट लाइवलीहुड पुरस्कार से हमें सम्मानित करने के लिए आभार प्रकट करने आई हूँ। इस पुरस्कार ने हमें आश्वासित किया है कि हमारे प्रयासों की दिशा सही है। यह सम्मान केवल सेवा का नहीं है बल्की समूचे गैर-औद्योगिक जगत का है, दुनिया भर के उन मज़दूरों का है जो स्वरोज़गार में जुटे हैं। जिनकी किस्मत में हमेशा वंचित रहना नहीं लिखा है। मैं गर्व के साथ सेवा के सदस्यों की ओर से राइट लाइवलीहुड पुरस्कार को स्वीकार करती हूँ।"

- राइट लाइवलीहुड पुरस्कार को स्वीकारते समय दिए गए भाषण का अंश



विवाह रोकने के मकसद से बनी युवाओं की एक परियोजना का नेतृत्व किया। राज्य सरकार से भी समूह ने आग्रह किया कि वह इस मुद्दे पर गंभीरता से ग़ौर करे। द एल्डर्स के साथ अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया, "मुझे याद है कि द एल्डर्स के शुरुआती वर्ष बेहद महत्वपूर्ण थे। क्योंकि हम एक-दूसरे को जानने-समझने की कोशिश के साथ अपने अभिगम को भी गढ़ने की चेष्टा कर रहे थे। समूह के अधिकांश सदस्य विभिन्न देशों के पूर्वाध्यक्ष या संयुक्त राष्ट्र से जुड़े कूटनीतिज्ञ थे, जबकि आर्चबिशप टूटू और मैं ज़मीनी स्तर पर काम कर चुके थे।"

"हम समूह में विविध दृष्टिकोणों और कौशलों को लाए। हमारे परामर्शदाता समूह में कुछ बेहद सूझबूझ वाले, योग्य व्यक्ति थे जो विभिन्न फाउन्डेशनों, विद्वानों और व्यवसाय जगत के ताज़े दृष्टिकोणों को लाए। पर जब भी मतभेद के समाधान का समय आता परदे के पीछे मध्यस्थता करने हम महिलाओं या उन अन्य लोगों को उभारते जिनकी आवाज़ों का अमूमन स्वाल्प प्रतिनिधित्व रहा हो। साथ ही हम मुद्दे के मूल कारणों पर प्रकाश भी डालते - जैसे जलवायु परिवर्तन, जैण्डर या आर्थिक असमानता, या बेरोज़गारी। मैं अर्से से मानती रही हूँ कि शांति प्रक्रिया में समाज में संतुलन पुर्नस्थापित करना और नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। मेरा सौभाग्य था कि द एल्डर्स की सदस्य के रूप में मैं अपना यह नज़रिया साझा कर सकी।"

कुलाधिपति का पद

इला भट्ट वर्तमान में गुजरात विद्यापीठ की कुलाधिपति हैं। इस शैक्षणिक संस्था के लिए उनकी दिशादृष्टि क्या है? वे कहती हैं कि कुलाधिपति के रूप में विश्वविद्यालय को हमें गांधी के पथ पर बनाए रखना होगा, पर आज के संदर्भ में। गांधीवादी मूल्यों को सुरक्षित करना होगा। महात्मा गांधी के लिए शिक्षा का लक्ष्य था पूर्ण स्वाराज की प्राप्ति। मतलब जब तक समाज का हरेक व्यक्ति आज़ाद न हो स्वराज की अवधारणा अधूरी ही रहेगी। शिक्षा की यह दृष्टि आज भी पूरी तरह वैध है। सच तो यह है कि यह आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक है।"

परिवार

इला जी की बेटी अमीमयी, येल विश्वविद्यालय म्यूज़ियम में सहायक संग्रहाध्यक्ष हैं। उन्होंने एक अमरीकी मार्क पॉटर, जूनियर से विवाह किया जो एक मूर्तिकार और चित्रकार हैं। अमीमयी की बेटी माया ने हाल ही में एक भूटानी व्यक्ति से विवाह किया। अमीमयी के बेटे अर्जुन प्रिंस्टन विश्वविद्यालय में कृषि संबंधित विषय पर शोध कर रहे हैं। इला के बेटे मिहिर एक वास्तुकार और क्षेत्रीय योजनाकार हैं जो विगत 15 वर्षों से प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने पर काम कर रहे हैं। मिहिर की पत्नी रीमा नानावटी, सेवा के लिए काम करती हैं। वे सेवा के ग्रामीण कार्यक्रमों को संभालती हैं। मिहर व रीमा के दो बेटे हैं - सोमनाथ, जो अमरीका में ग्राफिक डिज़ाइनर हैं और रामेश्वर जो अहमदाबाद विश्वविद्यालय में पढ रहा है। उसकी रुचि फिल्म निर्माण में है।



एक ठेठ दिन

इला भट्ट का कहना है कि वे सुबह जल्दी नहीं उठतीं। उनकी सुबह चाय के एक प्याले से शुरू होती है। जिसके बाद वे व्यायाम कर नाश्ता करती हैं, नहाती और प्रार्थना करती हैं। ग्यारह बजे तक वे अपने दफ्तर के कामों में या बाहर जाने में व्यस्त हो जाती हैं। आजकल वे सार्वजनिक कार्यक्रमों में चुन कर ही भागीदारी करती हैं। उनकी यात्रा भी अब सीमित हो चुकी है। वे दोपहर का खाना कुछ देर से खाती हैं जिसके बाद कुछ देर आराम करती हैं। शाम चार बजे के बाद वे मुलाकातों और बैठकों के लिए समय निकालती हैं। 1993 में अपने पति की मृत्यु के बाद वे अपने बेटे मिहिर और उसके परिवार के साथ रहने लगी हैं। वे बताती हैं, ''इस कारण मैं अकेली नहीं हूँ। मैं घर में अपने परिवार के साथ रात का खाना खाती हूँ और अपने पोतों के साथ का आनन्द लेती हूँ। रात को मैं संगीत का अभ्यास करती हूँ, अपना काम करती हूँ, कुछ पढ़ती हूँ, प्रार्थना करती हूँ और करीब 1 बजे सोती हूँ।''

वे यह भी जोड़ती हैं कि परिवार के साथ गुज़ारे समय को वे अपने पोतों से सीखने में बिताती हैं। ''मैं उनके दिमागी खुलेपन और आधुनिकता को आध्यात्म से जोड़ पाने के कौशल से जीवन को जीने की कला सीखती हूँ।'' वे अहमदाबाद स्थित स्कूल श्रेयस फाउन्डेशन को अपने बच्चों व पोतों में रचनात्मकता को पोषित करने का श्रेय देती हैं। अपने पोतों से उनका जुड़ाव कैसा है? ''हमारी रुचियाँ समान हैं - लेखन, संगीत, कला, कविता। जब वे छोटे थे वे जापानी कविता शैली में हाइकू रचा करते थे और अपनी रचनाएं मुझे सुनाते थे।'